प्रातः क्लास 27-3-68 ओमशान्ति "अपने को आत्मा समझो,,"

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहों से रूह-रूहान कर रहे हैं। रूहों को समझा रहे हैं कि अपने को आत्मा समझो। बाप को याद करने से तुम्हारे जो भी पाप है वह सभी भस्म हो जावेंगे। सिर्फ इस जन्म के पाप नहीं हैं, जन्म-जन्मान्तर के मूतपलिती आत्मायें हैं। आत्मा जो सच्चा सोना था उस में खाद पड़ने से फिर शरीर भी पतित होता गया है। फर्क भी देखने में आता है। यह देवतायें गोरे थे। फिर सांवरे हो गये हैं। तुम जानते हो हमारी आत्मा पवित्र होने से फिर वहां शरीर भी शुध प्रकृति से बनेगा। अभी तो प्रकृति ही अशुध है। वह शुध होगी बाप को याद करने से। आत्मा तो जरूर शुध चाहिए ना। आत्मा को शुध करने लिए बाप को याद करना होता है। इसको ही कहा जाता है वफादार-फरमानबरदार-आज्ञाकारी। बाप तो कल्याण के लिए ही समझाते हैं। जितना बाप को याद करेंगे तो ऐसा फूल बन जावेंगे। फूलों में भी नम्बरवार होते हैं ना। आपे ही अपने को मियां, मिठू नहीं समझना है। कर्तव्य से समझ में आता है। यह किस प्रकार का फूल है। बच्चों का कर्तव्य है हरेक को बाप का पैगाम देना कि बाप को याद करो। खुद याद में होंगे तो पैगाम भी दे सकेंगे। खुद ही याद नहीं करते होंगे तो वह सच्चा मैसेन्जर नहीं ठहरे। जब कि सच्च-खण्ड में चलना है तो रीयलिटी में सच्चा बनना है। गपोड़ा नहीं मारना है। क्योंकि साथ में धर्मराज भी है ना। वह है हिसाब, किताब चुक्तु करने वाला। न बनेंगे तो धर्मराज हिसाब लेंगे। कैसे सज़ायें आदि मिलती हैं वह भी बच्चों ने सा० किया है। सज़ाओं का जिस द्वारा सा० कराया था वह भी नहीं हैं। भागन्ती के लाईन में चली गई। दिखाया तो भी सुधरे नहीं। माया कितनी प्रबल है। बाबा से पूछा गया था जो सज़ा भोगती है उनका क्या हिसाब-किताब होगा। बोला इनके बहुत पाप कट जायेंगे। धर्मराज ने इतनी सज़ायें दिखाई तो भी देखो बाप से बेमुख हो पड़ी। सज़ा भी देखो फिर भी ... जैसे ऊंट होता है वह पानी से बहुत डरता है। अपने ही मूत में उनका पैर फिसलती है। तो गिर पड़ते हैं। मनुष्य को भी ऊंट कहा जाता है। मनुष्य भी अपने मूत के कारण कितना गिर पड़ते हैं। मूत पलिती बन जाते हैं। तो गिर पड़ते हैं। बाप कहते हैं तुमको एक दो पर मूतना न चाहिए। काम कटारी चलाना यह है एक दो पर मूतना। बाप कितने कड़े अक्षर कहते हैं। आर्डीनेन्स निकालते हैं बच्चों में आया हूं मूत पलिती वालों को गिरने से बचाने। एक दो पर मूतो मत। सन्यासी भी इस कारण कहते हैं नारी नर्क का द्वार है। अभी यह तो तुम्हारा है प्रवृति मार्ग। उनका वह है निवृति- मार्ग। वह कभी भी राजयोग सिखला नहीं सकते हैं। सन्यासी गृहस्थियों को अपना फालोअर्स बना न सके। तुम्हारा गृहस्थ आश्रम पवित्र था वही अभी अपवित्र बना है। इसको फिर पवित्र बनाना है। तो नर-नारी दोनों को पवित्र बना पड़े। दोनों ही नर्क का द्वार है। फिर स्वर्ग का द्वार बनते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जोगराफी रिपीट होती है। जो ल०ना० स्वर्ग के मालिक थे वही फिर नर्क में मूत पलिती बने हैं। नर्क का द्वार बने हैं। फिर दोनों नर और नारी को स्वर्गवासी बनना है। तुम बच्चों को यह ज्ञान मिला है। और कोई को यह ज्ञान नहीं। सन्यासी कहते हैं नारी नर्क का द्वार है। यह तुमको बहुत बड़े अक्षरों में लिखना चाहिए। यह सालोगन बहुत अच्छी रीत लिखनी चाहिए। शंकराचार्युवाचः नारी नर्क का द्वार है, ज्ञान सागर पतित-पावन त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः नारी और नर दोनों स्वर्ग के द्वार हैं।" तुम भी अभी स्वर्ग के द्वार खोल रहे हो। जो खोलेंगे वही उस में प्रवेश करेंगे ना। और कोई की स्वर्ग में प्रवेशता नहीं होती।

बाबा ने यह भी समझाया था कि सारी सृष्टि इस समय कोस-घर है। यह पाईन्ट भाषण में पता नहीं समझाते हैं वा नहीं। हरेक अपने सेन्टर का सर्विस-समाचार जगदीश को भेज देते हैं यह अच्छा है मैगज़ीन वा अखबार निकालते हैं तो उन में यह रूहानी बातें डालनी है। इसको रूहानी सर्विस समाचार कहा जाता है। बाकी अखबारों में तो है जिसमानी समाचार। तो यह रूहानी समाचार भी छपना चाहिए। सभी समझते हैं मैगज़ीन में सर्विस समाचार पड़ता है तो सभी जगदीश को भेज देते होंगे। अच्छी2 बातें डाल सकते हैं। यह तो सत्य बात है ना। नारी को सर्पणी समझते हैं। परन्तु ऐसे तो है नहीं। सतयुग में भी नारी का संग तो

है ना। परन्तु वह है पवित्र। यहां माया का राज्य है तो स्त्री को देख ठहर नहीं सकते हैं। वहां माया का राज्य ही नहीं तो ठहर सकते हैं। रामराज्य में कर्म अकर्म हो जाते हैं। रावण-राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं। भूल बात पापों की हो जाती है। तो लिखना है नर और नारी। वह भल नारी लिखे। तुम तो हो प्रवृति मार्ग वाले। नारी और नर दोनो ही श्रीमत पर स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। बाप ज्ञान का सागर होने के कारण ही पतित-पावन कहलाया जाता है है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सिवाय बाप के और कोई में नहीं हैं। आगे के ऋषि-मुनि भी नहीं जानते थे। वह तो रजोगुणी ही होंगे। सन्यासियों को यह सतो, रजो, तमो का भी ज्ञान नहीं है। जो रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते ही नहीं। अभी बाप तुमको नालेज दे रहे हैं। वह है स्वर्ग का रचयिता तो तुमको भी स्वर्ग का मालिक बनाने लिए कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम पवित्र बन स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। इसलिए तुम पूछते हो सतयुगी स्वर्गवासी हो या कलियुगी नर्कवासी हो? यह भी तुम इस संगम युग पर ही पूछते हो। इस पुरुषोत्तम संगम युग का कोई भी मनुष्यमात्र को पता नहीं है। इसलिए यह अक्षर भी घड़ी2 लिखनी चाहिए। भूलना न चाहिए। अक्सर कर के बच्चे पुरुषोत्तम संगम युग में पुरुषोत्तम अक्षर लिखना भूल जाते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही पुरुषोत्तम होता है। मनुष्य है अज्ञानी लोग। अज्ञानी भक्तों को कहा जाता है। जिनके लिए बाप कहते हैं मेरे से मिल सके। मेरे से ज्ञान द्वारा ही मिल सकते हैं। भक्तों को ज्ञान का सागर बाप ही आकर ज्ञान सुनाते हैं। भक्ति में चलते2 सीढ़ी नीचे ही उतरते जाते हैं। अथाह भक्ति है। ज्ञान तो चपटी का काम है। पढ़ कर पास किया। बस। तुम फूल बन जाते हो। तुम समझते हो इस कालेज में कौन2 कितना पढ़ते हैं और फिर पढ़ाते भी हैं। टीचर तो सभी को बनना ही है। टीचर भी तुम हो। कोई कोई टीचर भी एकदम गन्दे बन पड़ते हैं। कोई सुने कहेंगे ऐसे अपवित्र भी रहते हैं। बाबा ने कब नाम नहीं निकाला है कि फ्लानी ऐसी है। इसलिए कोई भी उनको सेन्टर पर आने न देवे। कहां2 लाचारी आने भी देना पड़ता है। अन्त्री अनके ही कल्याण के लिए। नहीं तो फिर कहां जावेंगे। ऐसे भी है, बेहद के बाप से और भगवान से प्रतिज्ञा कर के भी फिर गन्द में गिर पड़ते हैं। आधा कल्प की ठव पड़ी हुई है ना। कहते भी हैं ना कूते के पूंछ को कितना भी नैरे में डालो तभी भी सीधा नहीं होता। अभी बाप कहते हैं विकार में जा डाग मत बनो। गाड-गाडेस बनो। फिर भी पुरुषार्थ करते2 दोनो ही डाग और बीच बन जाते हैं। बाप कहते हैं यह देखो डीटी डिनायस्टी है ना। गाड-गाडेस की डिनायस्टी है। नाम देवी-देवता कहा जाता है। विलायत वाले भी इनको गाड-गाडेस कहते हैं। लार्ड कृष्ण कहते हैं। परन्तु यह अक्षर ठीक नहीं हैं। महाराजा-महारानी ल०ना० ठीक है। वह है देवी-देवतायें आजकल तो बहुतों को फ्लानी देवी कह देते हैं। है बिलकुल नहीं। किसी में देवीगुण अच्छे होते हैं तो भी कहते हैं इन में तो देवताई गुण है। बच्चे समझते हैं आसुरीदुनिया में तो कोई भी देवीगुण होती ही नहीं। हां कोई2 अच्छे रिलीजियस माईन्डेड होते हैं। उन्हों के रहने, करने भी बड़ी अच्छी होती है। परन्तु वह कोई सच्चे2 वैष्णव नहीं हैं। काम कटारी चलाते हैं तो वह भी कसाई ठहरे। बाबा ने कहा था लिखना चाहिए भगवानुवाच: काम महाशत्रु है। भगवान का नाम भी लेना पड़े। बाप बड़ा जोर से समझाते हैं। तुमको भी लिखना जरूर है जो उन्हों के कानों में पड़े। बाप सिर्फ तुम भारतवासियों को ही नालेज देते हैं। जो आदी सनातन देवी-देवता धर्म में थे। बाप कहते हैं मैं भारत में ही आता हूं। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई बनता नहीं। पवित्र फिर आधा कल्प बादशकदम अपवित्र बन जाते हैं। जब पवित्र देवताओं का राज्य होता है तो दूसरे खण्ड होते ही नहीं। यह सारा अभी तुम्हारे में है। और किसी में नहीं हैं। तुम कोई से भी पूछ सकते हो रचयिता और रचनाको जानते हो? कब भी जवाब दे नहीं सकेंगे। जानते ही नहीं हैं। तुम्हारे बिगर कोई भी परिचय दे न सके। तुमको भी बाप से परिचय मिला है। वह तो बाप को ही नहीं जानते। सर्व-व्यापी कह कितनी ग्लानीकर

देते हैं। इसमें डरने की कोई बातनहीं। तुम कह सकते हो भगवानुवाच काम महाशत्रु हैयह है ही विकारी दुनिया। निर्विकारी दुनिया बिलकुल अलग है। इनको कोई स्वर्ग थोड़े ही कहेंगे। भारतवासी पतित विकारी यहां भी अपने को स्वर्ग का मालिक समझते हैं। समझते हैं हमको धन है, जेवर है, एरोपलेन है, यही स्वर्ग है। उन्हीं की बुधि में है हम यहां ही स्वर्गवासी हैं। बाप कहते हैं जो अपने को स्वर्ग में समझते हैं, उनको छोड़ दो। स्वर्गवासी हम बनावें ही क्यों। पुकारा भी द्रौपदी ने है ना। यह हमकोनंगन करते हैं। इनसे बचाओ। अभी बाप तुम बच्चों को पावन बना रहे हैं। कहते हैं अपने अन्दर देखो हम बन्दर को वरने लायक हैं या ल०ना० को वरने लायक ब्रह्मा देवता हैं। भला तो सभी बन्दर ही बन्दर है। बाप ने यह उठाई है रावण पर जीतपाने लिए। इनका अर्थ भी बड़ा गुह्य है। दुनिया यह राज समझ सके। तुम बच्चों को पाईन्ट्स तो बहुत मिलती रहती है। राम-लीला ग्राउन्ड में तुमऐसी2 बातें समझा सकते हो। डरने की बात ही नहीं। तो मनुष्य समझ जाये बाप संगम पर ही आते हैं।

मनुष्यों की सूरत सुरत मत मनुष्य की है सीरत है बन्दर की। बापआकर दैवीगुण धारण कराते हैं। जो फिर आधा कल्प लिए स्थाई हो जाती है। 2। जन्मों का फल मिलता है। बच्चे जानते हैं ब्रह्मा सेना ही रावण पर जीत पाती है। बाकी भक्ति मार्ग में तो सभी बातें उल्टी लगा दी है। कितनी ग्लानी कर दी है। अभी तुम जानते हो हम पुरुषार्थ कर यह देवता बनते हैं। फिर वाममार्ग में जाते हैं तो पहले2 शिव की पूजा करते हैं। उस समय धन बहुत रहता है। तो हीरे का लिंग बनाते हैं। फिर बाद में उनको ही काला बना देते हैं। तमोप्रधान में ले जाते हैं। मनुष्य खुद भी तमोप्रधान बन जाते हैं ना। तुम शिव के मंदिर में भी जाकर समझा सकते हो। आज नहीं समझेंगे कल परसो जरूर समझेंगे। पूंछ तो सभी का सीधा होना ही है। नहीं तो पूंछ भी काट लेंगे। आग लगा देंगे। पूंछों को आग तो लगनी ही है। बन्दरों के पूंछों को तो आग लगेगी तो लंका जल जावेगा। बिचार सागर मथन कर अच्छी रीत रिफाईन कर लिखना चाहिए। युक्ति ऐसी रचनी चाहिए है जो सभी के हाथ में आवे। और समझे बरोबर हमको पैगाम मिला था। हम ने ध्यान नही दिया। अभीटाईम तो पड़ा है। इसलिए तुमपूछते हो सतयुगी हो या कलियुगी हो? जो पूछते हैं वह जरूर जानते होंगे। इसलिए तुमको तरस पड़ता है। बोलो सतयुगी बनना है तो आओ हम बाप को बतावें। बनाते भी कितना सहज है। बाप को याद करनेसेतमोप्रधान कट निकल जावेगी। बाप तो है ही रूहरूप। बच्चों को भी ऐसा ऊंच बनाते हैं। फिर नीचे उतरना ही है। कट चढ़नी ही है। सभी पर कट चढ़ जाती है। कट चढ़ी हुई चीज़ को घासलेट में डालते हैं उतारने लिए। तुम्हारा भी बुधि योग बाप से होगा तो कट उतरती जावेगी। अगर कट रह जाती है तो फिर सज़ा खानी पड़ती है। तुम जानते हो माला आठ की ही है। जो पास विथ आनर होते हैं। यह बहुत बड़ा इम्तहान है। इसमें ही बहुत फेलियर होते हैं। बाप ने समझाया है देवी देवता धर्म वालों का ही कनेक्शन है। जो द्वापर के बाद आते हैं वह फिर भी द्वापर के बाद ही आवेंगे। वह स्वर्ग में जा नहीं सकते। जो स्वर्ग में आये होंगे वही फिर रिपीट करेंगे। तो इन सभीबातों पर विचार सागर मथन कर धारण करना है और अंतन्त निकाल लिखना है। यह भी बाबा ने कहा थाकोई भी बड़ी घटना देखो तो ब्रह्माकुमारि के नाम से लिख सकते होयह तो कोई नई बात नहीं फलाना मरा फिर 5000वर्ष बाद ऐसा ही होगा। 5000वर्ष पहले भी हुआ था। वृद्धहो छोटा हो हार्टफेल तो कोई का भी होता है। फोरन अखबार में आदत में लिखना चाहिएजो पढ़ सके। ऐसी कोई खास बात हो तो मुख्य 5-7 अखबारों में डालो। यह तो 5000वर्ष पहले भी हुआ था। सो फिर रिपीटकरते रहेंगे। बड़ी2 अखबार में तीक2 लगाते रहना चाहिए। आखीरीन तो मनु की बुधि खुलेगी। यह भी अखबार में या मेगजीन में लिख सकते हो। द्वापर से लेकर कोसघर बन गया है। सतयुग-त्रेता में था अहिंसा ही देवी देवता परमोधर्म। और यहां है हिंसा। इनको ही आसुरी धर्म कहेंगे। ऐसी2

बातें लिखो जो बहुत पढ़े। मैगजीन तो सिर्फ ब्राह्मण बच्चे ही पढ़ते हैं। और तो इससे कुछ समझेंगे नहीं। लिटरेचर से कोई समझ जाये मुश्किल है। अपने बच्चे भी मैगजीन से पूरा समझ नहीं सकते हैं। तो औरों का क्या बात है। कई तो मैगजीन पढ़ते भी नहीं हैं। कई तो बाबा की टेप भी नहीं सुनते। दिल से हरेक पूछे हम रेगुलर मुरली पढ़ते हैं। या अपने नशे मे रहते हैं। एक दिन भी मुरली नहीं पढ़ते तो अवसेन्ट पड़ जाता है। रेगुलर स्टुडन्ट कब अवसेन्ट नहीं डालते। सावधानी नहीं मिलने से कोई न कोई विकर्म बन जावेंगे। मनसा का कोई पाप नहीं लगता है। कर्मणा मे किया तो पाप बन जावेगा। मनसा तूफान बहुत आ आवेंगे तुमको गिराने। कर्म इन्द्रियों से कोई भी बुरा कर्म नहीं करना है। सब से बड़ा है काम विकार। उसमें गिर तो सारी कमाई चट हो जावेंगी। फिर नये सिरे मेहनत करनी पड़े। इसलिए बाबा सीढ़ी ऊपर चढ़ाते रहते हैं। अगो तेन कहते थे भाई बहिन समझो। परन्तु देखो इन में भी नुकसान होता है इसलिए अभी भाई2 समझो तो बाप याद रहेंगे। बाप की याद से विकर्म जल्दी विनाश होंगे। और बाप के पास चले जावेंगे। देह का भान टूट जावेगा। तुमको ऐसे शरीर छोड़ना है जैसे सर्प का मिशाल है। सन्यासी भी ब्रह्म में लीन होने लिए ऐसे बैठे2 शरीर छोड़ते हैं। परन्तु ब्रह्म में तो कोई जा नहीं सकते हैं। जैसे कोई करवट खाने से पाप मिट जाते हैं फिर भी जन्म-मरण में तो आना ही है। वापस तो कोई जा नहीं सकते। वह लोग ब्रह्म में लीन होने लिए ही यत्न करते हैं। देह का भान टूट गया तो बाकी रही आत्मा। इससे भी शान्ति मिल जाती है। बाप ही आकर शान्ति का रास्ता बताते हैं। उनको यह पता नहीं है हम फिर भी जन्म लेंगे। अच्छी अवस्था वाले शरीर छोड़ते हैं तो उनकी महिमा भी होती है। उन में ताकत रहती है। सभी कुछ आपे ही मिलता है। वह सभी हैं भक्ति मार्ग। तुम हो प्रवृति मार्गवाले। तुम ऐसे फूल बनते हो। अपने को देखना है कहां तक हम बाबा को याद करते हैं। फिर आप समान भी बनाना पड़े। सर्विस करनी पड़े। अच्छे सर्विस एबुल बच्चों को बाबा दौड़ाते रहेंगे। सर्विसकरो। यहां बैठ कर क्या करेंगे। यह भी बाबा ने समझाया है पहले2 कोई को अलफ का सबक देना है तो समझे बेहद का बाप कल्प पहले भी आया था। स्वर्ग स्थापन किया था। अभी फिर बाप आये हुवे हैं। बाप स्थापना की करते हैं। प्रवृति मार्ग की। यह राजयोग है ना। वह निवृति मार्ग वालों का धर्म ही अलग है। वह भी राजयोग सिखलाये न सके। राजयोग तो भगवान को ही आकर सिखलाना है। यह (ल०ना०) पवित्र-प्रवृति मार्ग वाले थे। अभी हैं विकारी प्रवृति मार्ग वाले। इन देवताओं के आगे जाकर महिमा करते हैं। तुम पवित्र हो हम अपवित्र हैं। अभी तुम समझते सब तो हम खुद ही बन रहे हैं। फिर हम उन्हों के आगे माथा कैसे टेकें। उतरते2 हम यह बने हैं। फिर हम पुरुषार्थ कर यह बनेंगे। तो अन्दर खुशी होनी चाहिए ना। अपने को देखना चाहिए हम लायक बने हैं। नारद भक्त को भी कहा ना। अपनी सिकल देखो। तो देखो हम तो बन्दर हैं। तुम कह सकते हो कोई भी देवता बन न सके क्योंकि [illegible] कलयुगी देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला बाप ही है। समझाने से कोई भी झट समझ जावेंगे। कोई [illegible] से आवेंगे। कुछ न कुछ समझ कर जावेंगे। यह पैगाम सभी के लिए हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। वही पतित-पावन है। एक को याद करो तो एक धर्म की स्थापना हो जावेगी। ऐसे नहीं सभी धर्म एक बन जावेंगे। वह तो हो न सके। अभी तुम बच्चे समझते हो मनुष्यों की बुद्धि कितनी भुर्ख है। कुछ भी समझते नहीं। इसलिए तुम समझाते हो कि तुम भारतवासी ही सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हो। फिर अभी सतोप्रधान बनना है। दिल अन्दर खाना चाहिए हम सर्विस तो करते नहीं हैं। सर्विस करने लिए तो जाना पड़े। जाकर पैगाम देना पड़े। भगवानुवाच मामेकं याद करने से यह बनेंगे। यह पैगाम भी किसको नहीं दे सकते तो वर्थ नाट अ पेनी कहेंगे। समझना चाहिए हम सर्विस नहीं करते हैं तो पद भी नहीं मिलेगा। पुरुषार्थ करना चाहिए हमको ऐसा खुशबूदार फूल बनना है। बाबा रोज दो तीन प्रकार के फूल ले आयेंगे अक के फूल भी यहां है ना। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप दादा याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

-: : ओमशान्ति : :-